CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत

श्रीहनुमान बाहुक

SCANNED

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

प्रकाशकः

卐 नाथ पुस्तक भण्डार
१९४-दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६

दूरभाष : २३२७५३४४

प्रथम संस्करण : सन् २००४

मूल्य : रु० १० .००

शिवनाथ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

✻ श्रीगणेशाय नमः ✻

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत

हनुमानबाहुक

छप्पय

सिन्धु-तरन सिय-सोच-हरन रबि-बाल-बरन-तनु।
भुज बिसाल, मूरति कराल, कालहुको काल जनु ॥
गहन-दहन-निरदहन-लंक, निःसंक, बंकभुव ।
यातुधान-बलवान-मान-मद-दवन पवनसुव ॥
कह तुलसिदास सेवत सुलभ, सेवक हित संतत निकट।
गुन गनत, नमत, सुमिरत, जपत समन सकल-संकट-बिकट॥१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

भावार्थ– जिनका शरीर प्रात:कालीन सूर्य के समान (लाल) है, जो समुद्र लाँघकर महारानी सीता के शोक को हरने वाले हैं। जो लम्बी भुजाओं वाले, विकरालमूर्त्ति मानों काल के भी काल हैं। न जलाया जाने योग्य लंकारूपी गम्भीर वन को जलाने वाले, (सदा) नि:शंक (रहने वाले, टेढ़ी भौंह वाले। बलवान राक्षसों के मान और गर्व का नाश करने वाले पवनकुमार। तुलसीदास कहते हैं कि सेवा करने में सुलभ हैं और सेवकों की भलाई करने के लिये सदा निकट रहते हैं। (उनका) गुण गाते ही, (उन्हें) प्रणाम करते ही, उनका स्मरण और नाम जपते ही समस्त भयंकर संकटों का नाश हो जाता है ॥१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वर्न-सैल-संकास कोटि-रवि-तरुन-तेज घन।
उर बिसाल, भुजदंड चंड नखबज्र बज्रतन॥
पिङ्ग नयन, भ्रुकुटी कराल रसना-दसनानन।
कपिस केस, करकस लँगूर, खल-दल-बल-भानन॥
कह तुलसिदास बस जासु उर मारुतसुत मूरति बिकट।
संताप पाप तेहि पुरुष पहिं सपनेहुँ नहिं आवत निकट॥२॥

भावार्थ– सुवर्णगिरि के समान (शरीर), करोड़ों मध्याह्नकालीन सूर्य के समान अनन्त तेजस्वी, विशाल हृदय, अत्यन्त बलवान भुजाएँ, वज्र के समान नाखून और शरीर हैं, पीले नेत्र हैं। भौंह, जीभ, दाँत और मुख विकराल हैं। भूरे बाल हैं, दुष्टों के बल को

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-
तोड़ने वाली कर्कश पूँछ है। तुलसीदास जी कहते हैं कि जिसके हृदय में श्री हनुमान जी की (ऐसी) विकराल मूर्ति बस जाती है, उस पुरुष के पास स्वप्न में भी दुःख और पाप नहीं आते – प्रत्यक्ष आने को कौन कहे ॥२॥

झूलना

पंचमुख छमुख भृगुमुख्य भट, असुर-सुर,
सर्व सरि समर समरत्थ सूरो ।
बाँकुरो बीर बिरुदैत बिरुदावली,
बेद बंदी बदत पैंजपूरो ॥
जासु गुनगाथ रघुनाथ कह, जासु बल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिपुल-जल-भरित जग जलधि झूरो ।
दीन-दुख-दमनको कौन तुलसीस है,
पवनको पूत रजपूत रूरो ॥३॥

भावार्थ— शिव, स्वामि कार्तिक, परशुराम आदि योद्धाओं, दैत्यों और देवताओं के युद्धरूपी नदी से पार जाने में सामर्थ्यवान वीर हैं। वेदरूपी वन्दीजन कहते हैं कि आप पूरी पैजवाले हैं अर्थात् बेहद दौड़ने वाले हैं, वीर-बाँकुरे हैं, कीर्तिवान और यशस्वी हैं। जिनकी गुणावली को श्रीरघुनाथजी ने कहा, जिनके पराक्रम से अगाध जल से भरा हुआ संसार-समुद्र सूख गया। इस दीन के दुःख का नाश करने वाला राजपुत्र पवनकुमार के सिवा तुलसी का स्वामी दूसरा कौन है ? अर्थात् कोई नहीं ॥३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

घनाक्षरी

भानुसों पढ़न हनुमान गये भानु मन-
अनुमानि सिसुकेलि कियो फेरफार सो ।
पाछिले पगनि गम गगन मगन-मन,
क्रमको न भ्रम, कपि बालक-बिहार सो ।।
कौतुक बिलोकि लोकपाल हरि हर बिधि,
लोचननि चकाचौंधी चित्तनि खँभार सो ।
बल कैधौं बीररस, धीरज कैं, साहस कैं,
तुलसी सरीर धरे सबनिको सार सो ।।४।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भावार्थ– हनुमान जी सूर्य भगवान के पास पढ़ने गये; सूर्य ने मन में विचार करने के बाद बच्चों का सा खेल करते हुए बहाना किया। हनुमान जी ने प्रसन्न मन से बाल-विहार में ही सूर्य की ओर मुख करके पीठ की ओर पैरों से आकाश में गमन किया और पाठ्य-क्रम में उन्हें कहीं भी भ्रम नहीं हुआ। इस कौतुक को देखकर इन्द्रादि लोकपाल, विष्णु, शिव और ब्रह्मा की आँखें चौंधिया गयीं तथा चित्त इस असमंजस में पड़ गया। तुलसीदास कहते हैं कि (सब लोगों का चित्त असमंजस में पड़ गया कि) बल, वीर रस, धैर्य अथवा साहस ने तो यह शरीर धारण नहीं किया है अथवा यह शरीर इन सबके निचोड़ से बना है ? ॥४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

भारतमें पारथके रथकेतु कपिराज,
गाज्यो सुनि कुरुराज दल हलबल भो ।
कह्यो द्रोन भीषम समीरसुत महाबीर,
बीर-रस-बारि-निधि जाको बल जल भो ॥
बानर सुभाय बालकेलि भूमि भानु लागि,
फलँग फलाँगहूते घाटि नभतल भो ।
नाइ-नाइ माथ जोरि-जोरि हाथ जोधा जोहैं,
हनुमान देखे जगजीवन को फल भो ॥५॥

भावार्थ– महाभारत के युद्ध में अर्जुन के रथ की पताका पर (बैठे हुए) हनुमान जी ने गर्जन किया, जिसको सुनकर दुर्योधन के दल में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

खलबली-सी मच गयी। द्रोणाचार्य और भीष्म ने कहा कि यह महावीर पवनकुमार हैं, जिनका बल वीररस रूपी समुद्र का जल हुआ है। इन्होंने बन्दर के स्वभावानुसार बालक्रीड़ा में पृथ्वी से सूर्य तक के कुदान में आकाश को एक पग से भी कम कर दिया था। योद्धागण मस्तक झुका-झुकाकर और हाथ जोड़कर प्रतीक्षा करते हैं और हनुमानजी का दर्शन पाने पर अपने सांसारिक जीवन को सफल समझते हैं ॥५॥

गोपद पयोधि करि, होलिका ज्यों लाय लंक,
निपट निसंक परपुर गलबल भो ।
द्रोन-सो पहार लियो ख्याल ही उखारिकर,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

कंदुक-ज्यों कपिखेल बेल कैंसो फल भो ॥
संकटसमाज असमंजस में रामराज,
काज जुग-पूगनिको करतल पल भो ।
साहसी समत्थ तुलसीको नाह जाकी बाँह,
लोकपाल पालनको फिरि थिर थल भो ॥६॥

भावार्थ– समुद्र को गाय के खुर (के गड्ढे) के समान करके एकदम निःशंक भाव से लंका को होलिका के समान जला डाला जिससे दूसरे की नगरी (लंका) में कुहराम मच गया। द्रोण जैसे भारी पर्वत को हँसी-हँसी में ही उखाड़कर गेंद की तरह हाथ में उठा लिया; वह उनके लिये बेल के फल के समान खेल की सामग्री बन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

गया। समाज का संकटकाल था, रामराज्य असमंजस में पड़ा हुआ था, (हनुमाजी के पराक्रम से उस समय) युगभर में पूरा होने वाला काम पलभर में मुट्ठी में आ गया। तुलसी के स्वामी साहसी और सामर्थ्यवान हैं; जिनकी भुजाएँ लोकपालों का पालन करने तथा उन्हें फिर से स्थिरतापूर्वक बसाने का स्थान हो गयीं ॥६॥

कमठकी पीठि जाके गोड़निकी गाड़ैं मानौ,
नापके भाजन भरि जलनिधि-जल भो।
जातुधान-दावन, परावनको दुर्ग भये,
महामीनबास तिमि तोमनिको थल भो॥
कुंभकर्न-रावन-पयोदनाद-ईंधनको,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

तुलसी प्रताप जाको प्रबल अनल भो ।
भीषम कहत मेरे अनुमान हनुमान-
सारिखो त्रिकाल न त्रिलोक महाबल भो ।।७।।

भावार्थ— कच्छप की पीठ में जिनके पैरों के गड्ढे मानों समुद्र का जल भरने के लिये नाप के पात्र हुए। राक्षसों का नाश करते समय उनमें भगदड़ मची, किला बड़े राक्षसरूपी मत्स्यों को पनाह के लिये समुद्र हुआ। कुम्भकर्ण, रावण और मेघनादरूपी ईंधन को जलाने के लिये तुलसी कहते हैं कि जिसका प्रताप प्रचंड अग्नि हुआ। भीष्म-पितामह का कथन है कि मेरी समझ से हनुमान जी के समान महाबली तीनों काल और तीनों लोक में कोई नहीं हुआ ।।७।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

दूत रामरायको, सपूत पूत पौनको, तू
अंजनी को नन्दन प्रताप भूरि भानु सो ।
सीय-सोच-समन, दुरित दोष-दमन,
सरन आये अवन, लखन प्रिय प्रान सो ॥
दसमुख दुसह दरिद्र दरिबे को भये,
प्रगट तिलोक ओक तुलसी निधान सो ।
ज्ञान-गुनवान बलवान सेवा सावधान,
साहेब सुजान उर आनु हनुमान सो ॥८॥

भावार्थ— आप राजा रामचन्द्र जी के दूत, पवन देव के पवित्र और सुयोग्य पुत्र, अंजनी को आनन्द देने वाले और असंख्य सूर्य के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

समान प्रतापी हैं। जानकी जी के शोक का नाश करने वाले, पाप तथा दोष के विध्वंसकारी और शरण में आये हुए दोनों की रक्षा उसी प्रकार करने वाले हैं जिस प्रकार (शक्ति लगने पर आपने) लक्ष्मण जी की प्राणरक्षा की थी। तुलसीदास के दुस्सह दरिद्ररूपी रावण का नाश करने के लिये तीनों लोक में आश्रय और गृहरूप प्रकट हुए हैं। ज्ञानवान, गुणवान, बलवान और सेवा में सावधान चतुर स्वामी श्री हनुमान जी को हृदय में लाओ ॥८॥

दवन-दुवन-दल भुवन-बिदित बल,
वेद जस गावत बिबुध बन्दीछोरको।
पाप-ताप-तिमिर-तुहिन-बिघटन-पटु,
सेवक सरोरुह सुखद भानु भोरको ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

लोक परलोकतें बिसोक सपने न सोक,
तुलसी के हिये है भरोसो एक ओर को ।
राम को दुलारो दास बामदेव को निवास,
नाम कलि-कामतरु केसरी-किसोर को ॥९॥

भावार्थ– दानव दल को नष्ट करनेवाला आपका बल संसार में विख्यात है; वेद आपका यश गाते हैं कि देवताओं को कारागार से छुड़ाने वाला आपके सिवा दूसरा कौन है ? पापान्धकार और दुःखरूपी पाले को घटाने में कुशल, सेवकरूपी कमल को सुख देने के लिये आप प्रातःकाल के सूर्य हैं । तुलसी के हृदय में केवल एक ही ओर का अर्थात् केवल हुनमान जी का ही भरोसा है; उसे स्वप्न में भी लोक और परलोक की चिन्ता नहीं; वह शोकरहित है । राम जी के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

दुलारे सेवक, शिव के अवतार केशरी-किशोर का नाम कलिकाल में कल्पवृक्ष के समान है ॥९॥

महाबल-सींव, महाभीम, महाबानइत,
महाबीर बिदित बरायो रघुबीर को ।
कुलिस कठोरतनु जोरपरै रोर रन,
करुनाकलित मन धारमिक धीर को ॥
दुर्जन को काल सो कराल पाल सज्जन को,
सुमिरे हरनहार तुलसी की पीर को ।
सीय-सुख-दायक दुलारो रघुनायक को,
सेवक सहायक है साहसी समीर को ॥१०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

भावार्थ– हनुमान जी महान बल की चरम सीमा, अत्यन्त विकराल, महान बाना वाले श्रीराम जी के चुने हुए विख्यात महायोद्धा हैं। वज्र के समान कठोर शरीर वाला, जोर या दबाव पड़ने पर युद्ध में कोलाहल मचाने वाला, करुणा से पूर्ण सुन्दर मन वाला, धार्मिक और धीर दूसरा कौन है? दुष्टों के लिये काल के समान भयावने, सज्जनों की रक्षा करने वाले, स्मरण करने से तुलसी की पीड़ा को हरने वाले, सीता जी को सुख देने वाले, श्री रघुनाथ जी के दुलारे और सेवकों की सहायता करने में पवनकुमार बड़े ही साहसी हैं ॥१०॥

रचिबे को बिधि जैसे पालिबे को हरि, हर,
मीच मारिबे को, ज्याइबे को सुधापान भो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

धरिबे को धरनि, तरनि तम दलिबे को,
सोखिबे कृसानु, पोषिबे को हिमभानु भो ॥
खल-दुख-दोषिबे को, जन-परितोषिबे को,
माँगिबो मलीन ताको मोदक सुदान भो ।
आरत की आरति निवारिबे को तिहूँ पुर,
तुलसी को साहेब हठीलो हनुमान भो ॥११॥

भावार्थ– सृष्टि की रचना के लिये ब्रह्मा, उसका पालन करने के लिये बिष्णु, मारने के लिये मृत्युरूप रुद्र और जिलाने के लिये अमृतपान के समान हुए। अपनाने के लिये पृथ्वी, अज्ञान के अन्धकार का नाश करने के लिये सूर्य, सुखाने के लिये अग्नि, पोषण करने के लिये

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant
चन्द्रमा और सूर्य हुए। खलों को दुःख देने और दूषित करने के लिये तथा भक्तों को सन्तुष्ट करने के लिये एवं मंगनपन रूपी मलिनताके लिये मोदकदाता हुए। तीनों लोकों में दुखियों के दुःख का निवारण करने के लिये तुलसी के स्वामी हठीले हनुमान जी हुए॥११॥

सेवक सेवकाई जानि जानकीस मानै कानि,
सानुकूल सूलपानि नवै नाथ नाँक को।
देवी दैव दानव दयावने ह्वै जोरैं हाथ,
बापुरे बराक और राजा राना राँक को॥
जागत सोवत बैठे बागत बिनोद मोद,
ताकै जो अनर्थ सो समर्थ एक आँक को।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सब दिन रूरो परै पूरो जहाँ तहाँ ताहि,
जाके है भरोसो हिये हनुमान हाँक को ॥१२॥

भावार्थ— सेवक हनुमान जी की सेवाएँ समझकर श्री रघुनाथ जी उनका आदर करते हैं, शिव जी अनुकूल रहते हैं और स्वर्ग के स्वामी इन्द्र सिर झुकाते हैं। देवी-देवता और दानव दया के पात्र बनकर हाथ जोड़ते हैं; फिर भला बेचारे तुच्छ और भिखमंगे राजा-राणा क्या चीज हैं। जागते, सोते, बैठते, डोलते, विनोद करते और आनन्दित रहते ऐसा कौन सिद्धान्त का समर्थ है जो हनुमान जी के सेवक का अनिष्ट चाहेगा ? उसे सब दिन जिसके लिये टोटा था, उसके लिये पूरा पड़ने लगेगा, जिसके हृदय में श्री हनुमान जी की हुंकार का भरोसा है ॥१२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सानुग सगौरि सानुकूल सूलपानि ताहि,
लोकपाल सकल लखन राम जानकी ।
लोक परलोक को बिसोक सो तिलोक ताहि,
तुलसी तमाहि कहा काहू बीर आन की ॥
केसरी किसोर बन्दीछोर के नेवाजे सब,
कीरति बिमल कपि करुनानिधान की ।
बालक ज्यों पालिहैं कृपालु मुनि सिद्ध ताको,
जाके हिये हुलसति हाँक हनुमान की ॥१३॥

भावार्थ— सेवकों और पार्वती के सहित त्रिशूलपाणि शिवजी, सब लोकपाल, लक्ष्मण जी, जानकी जी, और राम जी उन पर प्रसन्न

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

रहते हैं। तुलसीदास जी कहते हैं कि क्या उसे तीनों लोकों में लोक-परलोक में प्रसिद्ध किसी दूसरे वीर का लालच हो सकता है? बन्दीछोर केसरीनन्दन के निर्मल कीर्ति वाले, करुणानिधान श्री हनुमान के रहम करने पर सम्पूर्ण सिद्धजन और मुनिगण कृपालु होकर उस मनुष्य का बालक की तरह पालन करते हैं जिसके हृदय में हनुमान जी की हाँक उमँगती है अर्थात् हुंकार पैदा होती है ॥१३॥

करुनानिधान, बलबुद्धि के निधान, मोद
महिमानिधान, गुन-ज्ञान के निधान हौ ।
बामदेव-रूप, भूप राम के सनेही, नाम
लेत देत अर्थ धर्म काम निरबान हौ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

आपने प्रभाव, सीतानाथ के सुभाव सील,
लोक-बेद-बिधि के बिदुष हनुमान हौ ।
मन की, बचन की, करम की तिहूँ प्रकार,
तुलसी तिहारो तुम साहेब सुजान हौ ।।१४।।

भावार्थ— करुणा के स्थान, बल-बुद्धि के निधान (कोश), आनन्द और महिमा के धाम तथा गुण-ज्ञान के निधान हो। शिव-रूप, महाराज श्री राम जी के स्नेही और नाम लेने से अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष के देने वाले हो। हे हनुमान जी ! आप अपने प्रभाव से श्री राम जी के शीलस्वभाव, लोक वेद और विधि के पंडित हैं। आप चतुर स्वामी हैं। मन, वचन और कर्म तीनों प्रकार से तुलसी आपका है ।।१४।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

मन को अगम, तन सुगम किये कपीस,
काज महाराज के समाज साज साजे हैं ।
देव-बन्दीछोर रन-रोन केसरीकिसोर,
जुग जुग जग तेरे बिरद बिराजे हैं ।।
बीर बरजोर, घटि जोर तुलसी की ओर,
सुनि सकुचाने साधु, खलगन गाजे हैं ।
बिगरी सँवार अंजनीकुमार कीजे मोहिं,
जैसे होत आये हनुमान के निवाजे हैं ।।१५।।

भावार्थ– हे हनुमान जी ! आपने महाराज रामचन्द्र जी के लिये ऐसा समाज साज जुटा दिया, जो मन के लिये दुर्गम था, उसे आपने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सुगम कर दिया। हे केसरीनन्दन ! आप देवताओं को कारागृह से छुड़ाने वाले, युद्धक्षेत्र में कोलाहल मचाने वाले हैं; आपकी कीर्ति युग-युग से संसार में विराज रही है। हे श्रेष्ठ बल वाले वीर ! तुलसी के लिये आप निर्बल हो गये, यह सुनकर साधु-समाज संकुचित हो गया और दुष्ट-मंडली फूली नहीं समा रही है। अंजनीकुमार ! मेरी बिगड़ी हुई बातों को सुधारकर मुझे उसी तरह का बना दीजिये जिस तरह आपके प्रसन्न होने से पहले के लोग अर्थात् भूतकाल से होते आये हैं ॥१५॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सवैया

सुज्ञानसिरोमनि हौ हनुमान सदा जनके मन बास तिहारो ।
ढारो बिगारो मैं काको कहा केहिकारन खीझत हौं तो तिहारो ॥
साहेब सेवक नाते ते हातो कियो तो तहाँ तुलसी को न चारो ।
दोष सुनायेतें आगेहुँ को होसियार ह्वैंहों मन तौ हियहारो ॥१६॥

भावार्थ– हे हनुमान जी ! आप ज्ञान शिरोमणि हैं और भक्तों के मन में आपका सदैव निवास रहता है। मैंने किसी का क्या गिराया या बिगाड़ा है? किस कारण से (आप मुझ पर) अप्रसन्न हैं? मैं तो आपका (दास) हूँ। हे स्वामी ! आपने मुझे सेवक के नाते से अलग कर दिया है, किन्तु इसमें तुलसी का कोई वश नहीं। हाँ, यदि आप

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

मेरा अपराध सुना देंगे, तो मैं भविष्य के लिये सावधान हो जाऊँगा – अब तो मेरा मन हृदय से हार गया ॥१६॥

तेरे थपे उथपै न महेस, थपै थिरको कपि जे घर घाले।
तेरे निवाजे गरीबनिवाज बिराजत बैरिन के उर साले॥
संकट सोच सबै तुलसी लिये नाम फटै मकरीके-से जाले।
बूढ़ भये, बलि, मेरिहि बार, कि हारि परे बहुतै नत पाले॥१७॥

भावार्थ– आपके बसाये हुए को शिवजी भी नहीं उजाड़ते और हे महावीर ! जिस घर को आपने बर्बाद कर दिया, उसको ऐसा कौन है जो बसा सके? हे गरीबनिवाज ! आपके प्रसन्न होने पर (बहुत-से लोग) शत्रुओं के हृदय में चुभते हुए भी विराज रहे हैं – शत्रु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-
उनका एक बाल भी बाँका न कर सके। तुलसीदास जी कहते हैं कि आपका नाम लेने से सब तरह के संकट और सोच मकड़ी के जाले की तरह फट जाते हैं — उनका कहीं पता भी नहीं लगता। बलिहारी! आप मेरे ही बार बूढ़ हो गये — शक्तिहीन हो गये अथवा शरणागतों का पालन करते-करते अब थक गये? ॥१७॥

सिन्धु तरे, बड़े बीर दले खल, जारें हैं लंकसे बंक मवासे।
तैं रन-केहरि केहरिके बिदले अरि-कुंजर छैल छवा से ॥
तोसों समत्थ सुसाहेब सेइ सहै तुलसी दुख-दोष दवा से।
तोसों समस्थ सुसाहेब सेइ सहै तुलसी दुख-दोष दवा से।
बानर-बाज !बढ़े खल खेचर, लीजत क्यों न लपेटि लवासे ॥१८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

भावार्थ– आपने समुद्र लाँघकर बड़े-बड़े दुष्ट राक्षसों का नाश किया और लंका-सरीखे विकट दुर्ग को जलाया है। हे संग्रामरूपी वनके सिंह ! आपने हाथी के बच्चों के समान दिखाई पड़ने वाले शत्रुओं को नष्ट कर दिया था। आप जैसे सामर्थ्यवान और उत्तम स्वामी की सेवा करने पर भी तुलसीदास दोष और दुःख की आँच सह रहा है। हे वानररूपी बाज पक्षी ! इन दुष्ट दुःख-दोषरूपी पक्षियों को आप बटेर की तरह क्यों नहीं लपेट लेते? तात्पर्य यह है कि इन सांसारिक दोषों और दुःखों को मिटा देना आपके लिए बायें हाथ का खेल है। ऐसी दशा में यह तुलसी यदि उनसे पीड़ित रहे, तो यह बड़े आश्चर्य की बात है ॥१८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अच्छ-बिमर्दन कानन-भान दसानन आनन भा न निहारो ।
बारिदनाद अकम्पन कुम्भकरन्न-से कुंजर केहरि-बारो ॥
राम-प्रताप हुतासन, कच्छ विपच्छ, समीर समीरदुलारो ।
पापतें, सापतें, ताप तिहूँ तें सदा तुलसी कहँ सो रखवारो ॥१९॥

भावार्थ– अक्षयकुमार को मारने वाले, अशोकवाटिका को नष्ट करने वाले, रावण जैसे तेजस्वी के मुँह के तेज की ओर न देखने वाले अर्थात् उसकी जरा भी परवाह न करनेवाले। मेघनाद, अकम्पन और कुम्भकर्ण के सदृश हाथियों के (मद को चूर्ण करने के) लिये किशोरावस्था के सिंह तथा हे पवनदुलारे ! आप श्री राम जी के प्रतापरूपी अग्नि द्वारा तृणरूपी शत्रु को शीघ्रातिशीघ्र जलाने के लिये वायुरूप हैं। वही (पवन के पुत्र श्री हनुमान जी) पापों, शापों और दुःखों, इन तीनों से तुलसी की सदा रक्षा करने वाले हैं॥१९॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

घनाक्षरी

जानत जहान हनुमान को निवाज्यौ जन,
मन अनुमानि, बलि, बोल न बिसारिये।
सेवा-जोग तुलसी कबहुँ कहा चूक परी,
साहेब सुभाय कपि साहिबी सँभारिये॥
अपराधी जानि कीजै साँसति सहस भाँति,
मोदक मरै जो, ताहि माहुर न मारिये।
साहसी समीर के दुलारे रघुबीरजू के,
बाँह पीर महाबीर बेगि ही निवारिये॥२०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

भावार्थ– हे हनुमान जी ! आपकी बलि रूप में जाता हूँ; संसार जानता है कि यह दास आपका कृपापात्र है, अतः इसका अपने मन में अनुमान करके आप अपनी प्रतिज्ञा को न भुलाइये। हे कपिराज ! क्या कभी यह तुलसी आपकी सेवा के योग्य था? अर्थात् सेवा करने योग्य मैं कभी नहीं था। तो फिर इससे अब ऐसी कौन-सी भूल हुई (जो आप अपने चित्त से उतार रहे हैं)? हे स्वामी ! आप अपने स्वभावानुसार अपनी साहिबी को सँभालिये (नहीं तो मेरा क्या, बदनामी आप हीकी होगी; क्योंकि संसार मुझे आपका दास जानता है)। यदि आप मुझे अपराधी समझते हैं तो मेरी हजारों तरह की दुर्दशा कीजिये; किन्तु जो लड्डू देने से मर सकता हो, उसे विष से न मारिये। हे साहसी, पवन के पुत्र, श्री रघुनाथ जी के प्यारे, महावीर ! मेरी भुजाओं की पीड़ा को शीघ्र ही दूर कर दीजिये ॥२०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

बालक बिलोकि, बलि, बारेतें आपनो कियो,
दीनबन्धु दया कीन्हीं निरुपाधि न्यारिये ।
रावरो भरोसो तुलसी के, रावरोई बल,
आस रावरीयै, दास रावरो बिचारिये ॥
बड़ो बिकराल कलि, काकोन बिहाल कियो,
माथे पगु बली को, निहारि सो निवारिये ।
केसरीकिसोर, रनरोर, बरजोर बीर,
बाँहुपीर राहुमातु ज्यौं पछारि मारिये ॥२१॥

भावार्थ— हे दीनबन्धु ! बलिहारी, मुझे बालक देखकर लड़कपन से ही आपने अपना बना लिया, और माया-रहित अनोखी दया

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

की। जरा विचार कीजिये, तुलसी को केवल आप ही का भरोसा और बल है; आशा भी केवल आपही की है और दास भी आपका ही है। कलियुग बड़ा भयंकर है। इसने किसे व्याकुल नहीं किया ! इस बलवान कलियुग का पैर मेरे मस्तक पर देखकर उसे हटाइये। (मैं दबा जा रहा हूँ।) हे केशरीकिशोर ! आप युद्धक्षेत्र में कोलाहल मचाने वाले, परम वीर हैं। मेरी भुजाओं की पीड़ा को राहु की माता सिंहिका के समान पछाड़कर मार डालिये ॥२१॥

उथपे थपनथिर थपे उथपनहार,
केसरीकुमार बल आपनो सँभारिये ।
रामके गुलामनिको कामतरु रामदूत,
मोसे दीन दूबरे को तकिया तिहारिये ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

साहेब समर्थ तोसों तुलसी के माथे पर,
सोऊ अपराध बिनु बीर, बाँधि मारिये ।
पोखरी बिसाल बाँहु, बलि बारिचर पीर,
मकरी ज्यौं पकरिकै बदन बिदारिये ।।२२।।

भावार्थ– हे केशरीकुमार ! आप अपनेउस उजड़े हुए (सुग्रीव-विभीषण) को बसाने वाले तथा बसे हुए (रावण आदि) को उजाड़ने वाले बल को सँभालिये। हे रामदूत ! आप रामभक्तों के लिए कल्पवृक्ष के समान हैं। मुझ जैसे दीन और दुर्बल को केवल आप ही का सहारा है। हे वीर ! आपके समान सामर्थ्यवान स्वामी तुलसी के माथे पर हैं, फिर भी यह बिना अपराध ही बाँधकर मारा जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

बलिहारी ! विशाल पोखरी रूपी मेरी भुजाओं में पीड़ारूपिणी जलचारी मगरी है, इसका मुँह पकड़कर फाड़ डालिये ॥२२॥

राम को सनेह, राम-साहस, लखन सिय,
राम की भगति, सोच संकट निवारिये ।
मुदमरकट रोग-बारिनिधि हेरि हारे,
जीव जामवन्त को भरोसो तेरो भारिये ॥
कूदिये कृपाल तुलसी सुप्रेम-पब्बयतें,
सुथल सुबेल भाल बैठिकै बिचारिये ।
महाबीर बाँकुरे बराकी बाँहपीर क्यों न,
लङ्किनी ज्यों लातघात ही मरोरि मारिये ॥२३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

भावार्थ— राम जी के प्रेम, राम जी की हिम्मत और राम, लक्ष्मण, जानकी जी की भक्ति की जो चिन्ता है और उसमें जो मुझे संकट हैं, उनका आप निवारण कीजिये। आनन्द रूपी बन्दर रोग रूपी समुद्र को देखकर मन में हार मांन गये हैं; अर्थात् मुझे यह आशा नहीं रह गयी है कि मैं राम जी से प्रेम कर पाऊँगा, राम जी का भरोसा कर सकूँगा और उनका भक्त बन सकूँगा; इस जीव रूपी जामवन्त को आपका बड़ा भारी भरोसा है। हे कृपालु! तुलसी के सुन्दर प्रेम रूपी पर्वत से कूदकर और श्रेष्ठ स्थान हृदय रूपी सुबेल पर्वत के शिखर पर बैठकर विचार कीजिये। हे महावीर बाँकुरे! आप मेरी भुजाओं की तुच्छ पीड़ा रूपी लंकिनी को लात-प्रहार से क्यों नहीं मरोड़कर या रौंदकर मार डालते? ॥२३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

लोक परलोक हूँ तिलोक न बिलोकियत,
तोसों समरथ चष चारिहूँ निहारिये ।
कर्म, काल, लोकपाल, अग जग जीवजाल,
नाथ हाथ सब निज महिमा बिचारिये ॥
खास दास रावरो, निवास तेरो तासु उर,
तुलसी सो, देव दुखी देखियत भारिये ।
बात तरुमूल, बाँहुसूल कपिकच्छु-बेलि,
उपजी सकेलि कपिकेलि ही उखारिये ॥२४॥

भावार्थ– मैं चारों नेत्रों से देखता हूँ, किन्तु आपके समान सामर्थ्यवान मुझे लोक, परलोक और तीनों लोकों में कोई नहीं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

दिखायी पड़ता। हे नाथ! कर्म, काल, लोकपाल, संसार के अगम जड़-चेतन जीव सब आपके हाथ में हैं; जरा आप अपनी महिमा पर तो विचार कीजिये। ... यह तुलसी आपका निजी दास है; उसके हृदय में आपका निवास है; फिर भी हे देव! जरा देखिये तो सही, यह तुलसी अत्यन्त दुखी है। मात्र-व्याधि रूपी वृक्ष की जड़ में बाहुकी पीड़ा रूपी केवाँच की लता उत्पन्न हुई है। उसे आप बन्दर की क्रीड़ा से उखाड़ डालिये ॥२४॥

करम-कराल-कंस भूमिपाल के भरोसे,
बकी बकभगिनी काहू तें कहा डरैगी।
बड़ी बिकराल बालघातिनी न जात कहि,
बाँहुबल बालक छबीले छोटे छरैगी ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

आई है बनाई बेष आप ही बिचारि देख,
पाप जाय सबको गुनी के पाले परैगी ।
पूतना पिसाचिनी ज्यों कपिकान्ह तुलसी की,
बाँह-पीर महाबीर, तेरे मारे मरैगी ।। २५ ।।

भावार्थ– कर्म रूपी विकराल राजा के भरोसे बकासुर की बहन पूतना पिशाचिनी क्या किसी से डरेगी? वह बालकों को मारने में ऐसी भयंकरी है कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। वह अपने बाहुबल से सुन्दर नन्हें से बालक को (अवश्य) छलेगी। आप स्वयं ही विचार कर देखिये, वह वेष बदल कर बाहुरोग के रूप में आयी है; किन्तु यदि वह आप जैसे गुणी के पाले पड़ जाएगी, तो सबका

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

पाप भाग जाएगा। हे महावीर! तुलसी की बाहु-पीड़ा पूतना राक्षसी के समान है और आप श्री कृष्ण के समान; अर्थात् यह राक्षसी आपही के मारने से मरेगी ॥ २५ ॥

भालकी कि कालकी कि रोष की त्रिदोष की है,
बेदन बिषम पाप ताप छलछाँहकी ।
करमन कूटकी कि जंत्रमंत्र बूटकी,
पराहि जाहि पापिनी मलीन मनमाँह की ॥
पैहहि सजाय, नतु कहत बजाय तोहि,
बावरी न होहि बानि जानि कपिनाँह की ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

आन हनुमान की दोहाई बलवान की,
सपथ महाबीर की जो रहै पीर बाँह की ॥ २६ ॥

भावार्थ— यह विषम वेदना भाग्य-दोष, महाकाल, किसी के क्रोध, त्रिदोष, पाप अथवा दुःख के छल की छाया तो नहीं है ? अर्थात् इनमें से ही किसी एक के कारण मुझे यह कठिन पीड़ा हो रही है। (यह पीड़ा) मारणादि प्रयोग अथवा यंत्र-मंत्र रूपी वृक्ष का फल है। मन को मलिन और पापिनी (पूतना) ! भाग जा, नहीं तो मैं डंक को बजाकर कहता हूँ कि तू दंड पाएगी। श्री हनुमान जी का स्वभाव जानकर तू पगली न बन। हनुमान जी की (विचित्र) आन-बान है। उस बलवान की दुहाई ! महावीर की सौगन्ध खाकर कहता हूँ जो बाहु की पीड़ा रहे अर्थात् कभी नहीं रहेगी ॥ २६॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सिंहिका सँभारि बल, सुरसा सुधारि छल,
लङ्किनी पछारि मारि बाटिका उजारी है ।
लङ्क परजारि मकरी बिदारि बार-बार-
जातुधान धारि धूरिधानी करि डारी है ॥
तोरि जमकातरि मंदोदरी कढ़ोरि आनी,
रावनकी रानी मेघनाद महतारी है ।
भीर बाँह पीर की निपट राखी महाबीर,
कौनके सँकोच तुलसीके सोच भारी है ॥२७॥

भावार्थ– सिंहिका नाम की राक्षसी का अपने बल से संहार कर, सुरसा को छल से सुधार कर तथा लंकिनी को मार गिरा कर अशोक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant
वाटिका को उजाड़ डाला। लंकापुरी को भली-भाँति जलाकर तथा मकरी को विदीर्ण करके बारम्बार राक्षसों का विनाश किया।। यमराज का खड्ग अर्थात् परदा फाड़ कर रावण की रानी तथा मेघनाद की माता मन्दोदरी को आप बाहर निकाल लाये। हे महावीर ! तुलसी को भारी सोच इस बात का है कि आपने किसके संकोच से केवल मेरी महान बाहु-पीड़ा को रख छोड़ा है ? ॥ २७ ॥

तेरो बालकेलि बीर सुनि सहमत धीर,
भूलत सरीरसुधि सक्र-रबि-राहु की ।
तेरी बाँह बसत बिसोक लोकपाल सब,
तेरो नाम लेत रहै आरति न काहु की ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

साम दाम भेद बिधि, बेदहू लबेद सिधि,
हाथ कपिनाथही के चौटी चोर साहु की ।
आलस अनख परिहास कै सिखावन है,
एते दिन रही पीर तुलसी के बाहु की ॥ २८ ॥

भावार्थ– हे वीर ! आपके बचपन की लीलाएँ सुनकर धैर्यवान लोग सहम जाते हैं और इन्द्र, सूर्य, राहु को अपने शरीर की सुध भूल जाती है । आपके बाहुबल के भरोसे सब लोकपाल निःशङ्क होकर रहते हैं और आपका नाम लेने से किसी का भी दुःख नहीं रह जाता । साम, दाम, दण्ड और भेद की विधि तथा बेद-लवेद से भी सिद्ध है कि चोर और साहूकार की चोटी हनुमान जी के ही हाथ में है । इतने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant
दिनों तक तुलसी के बाहुओं में जो पीड़ा थी, उसका कारण या तो आपका आलस्य है, अथवा क्रोध, हँसी या शिक्षा है ॥ २८ ॥

टूकनिको घर घर डोलत कँगाल बोलि,
बाल ज्यों कृपाल नतपाल पालि पोसो है।
कीन्ही है सँभार सा अंजनीकुमार बीर,
आपनो बिसारि हैं न मेरेहु भरोसो है ॥
एतनो परेखो सब भाँति समरथ आजु,
कपिराज साँची कहौं को तिलोक तोसो है।
साँसति सहत दास कीजे पेखि परिहास,
चीरी को मरन खेल बालकनिको सो है ॥ २९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

भावार्थ— हे शरणागतों का पालन करने वाले कृपानिधान ! मैं दरिद्रतावश टुकड़ों के लिए घर-घर घूमता फिरता था, आपने बुलाकर बालक के समान मेरा पालन-पोषण किया है। हे वीर अंजनीकुमार ! सारांश यह है कि आपने ही मुझे सँभाला है, आप अपने इस दास को न भुलाएँगे, इसका मुझे भी भरोसा है। हे कपिराज ! मैंने बड़ी प्रतीक्षा की (किन्तु आपने कृपा नहीं की); इतने पर भी मैं सच कहता हूँ कि आपके समान सब तरह से सामर्थ्यवान तीनों लोकों में दूसरा कौन है? यह सेवक दुर्दशा सह रहा है, आप देखकर हँसी उड़ा लीजिये; किन्तु याद रखिये, जिस प्रकार बालकों के खेल में ही चिड़िया की मृत्यु हो जाती है, वही दशा मेरी होगी; पीछे आपको पछताना पड़ेगा ॥ २९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

आपने ही पाप तें त्रिताप तें कि साप तें,
बढ़ी है बाँहबेदन कही न सहि जाति है।
औषध अनेक जंत्र-मंत्र-टोटकादि किये,
बादि भये देवता मनाये अधिकाति है॥
करतार, भरतार, हरतार, कर्म, काल,
को है जगजाल जो न मानत इताति है।
चेरो तेरो तुलसी तू मेरो कह्यो रामदूत,
ढील तेरी बीर मोहि पीर तें पिराति है॥ ३०॥

भावार्थ– मेरे ही पाप से या त्रिताप से अथवा (किसी के) शाप से बाहुओं की पीड़ा ऐसी बढ़ी है कि न तो वह कही जाती है और न

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सही जाती है। मैंने बहुत-सी दवाएँ कीं, यंत्र-तंत्र और टोटके आदि किये, पर सब व्यर्थ हुआ; देवताओं को मनाने से तो पीड़ा और भी बढ़ जाती है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, कर्म, काल और संसार-जाल इनमें ऐसा कौन है, जो आपकी आज्ञा न मानता हो ? हे रामदूत ! यह तुलसी आपका दास है और आपने भी कहा है कि तू मेरा है। हे वीर ! आपकी ढिलाई मुझे इस बाहु-पीड़ा से भी अधिक पीड़ा दे रही है ॥ ३० ॥

दूत रामराय को, सपूत पूत बाय को,
समत्थ हाथ पाय को सहाय असहाय को।
बाँको बिरदावली बिदित बेद गाइयत,
रावन सो भट भयो मुठिका के घायको ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

एते बड़े साहेब समर्थ को निवाजो आजु,
सीदत सुसेवक बचन मन काय को ।
थोरी बाँहपीर की बड़ी गलानि तुलसी को,
कौन पाप कोप, लोप प्रगट प्रभाय को ॥ ३१ ॥

भावार्थ– आप रामचन्द्र जी के दूत, पवित्र वायु के सत्पुत्र, हाथ-पैर से सामर्थ्यवान और असहाय के सहायक हैं । आपकी सुन्दर विरु दावली प्रसिद्ध है और उसे वेद गाते हैं; रावण के समान योद्धा आपके घूँसे से घायल हो गया । इतने बड़े सामर्थ्यवान स्वामी का कृपापात्र मन-वचन-कर्म से अच्छी सेवा करने वाला (यह तुलसी) आज दुःख पा रहा है । तुलसी को अल्प बाहुपीड़ा की बड़ी ग्लानि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant
हैं; मेरे किस पाप के कारण आपको क्रोध करने से आपका प्रत्यक्ष प्रभाव लुप्त हो गया है ॥ ३१ ॥

देवी देव दनुज मनुज मुनि सिद्ध नाग,
छोटे बड़े जीव जेते चेतन अचेत हैं ।
पूतना पिसाची जातुधानी जातुधान बाम,
रामदूत की रजाइ माथे मानि लेत हैं ॥
घोर जंत्र मंत्र कूट कपट कुरोग जोग,
हनूमान आन सुनि छाँड़त निकेत हैं ।
क्रोध कीजे कर्म को प्रबोध कीजे तुलसीको,
सोध कीजे तिनको जो दोष दुख देत हैं ॥ ३२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant
भावार्थ– देवी, देवता, दैत्य, मनुष्य, मुनि, सिद्ध और नाग तथा जितने भी छोटे-बड़े, जड़-चेतन जीव हैं, पूतना, पिशाचिनी, राक्षसी, राक्षस आदि विपरीत रहने पर भी रामदूत श्री हनुमान जी की आज्ञा शिरोधार्य कर लेते हैं अर्थात् अनुकूल हो जाते हैं। भयंकर यंत्र, मंत्र, धोखा, छल और कुरोग का योग श्री हनुमान जी के आन-बान सुनकर स्थान छोड़ देते हैं। कर्म पर क्रोध कीजिये, तुलसी को शिक्षा दीजिये और उनका सुधार कीजिये, जो दोष और दुःख देते हैं॥ ३२॥

तेरे बल बानर जिताये रन रावन सों,
तेरे घाले जातुधान भये घर-घर के।
तेरे बल रामराज किये सब सुरकाज,
सकल समाज साज साजे रघुबर के॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant
तेरो गुनगान सुनि गीरबान पुलकत,
सजल बिलोचन बिरंचि हरि हर के ।
तुलसी के माथे पर हाथ फेरो कीसनाथ,
देखिये न दास दुखी तोसे कनिगर के ॥ ३३ ॥

भावार्थ– आपके बलने बानरों को रावण (जैसे प्रतापी) से जिताया; आपके बर्बाद करने से राक्षस बे ठिकाने के हो गये। आपके बल ने रामचन्द्र जी के राज्य में देवताओं का सब काम पूरा किया और रघुनाथ जी के समाज का सब साज सजाया था। आपके गुणों का गान सुनकर देवतागण पुलकित होते हैं और ब्रह्मा-विष्णु-महेश की आँखों में जल भर आता है। हे हनुमान जी ! तुलसी के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant
माथे पर हाथ फेरिये; अपने-सरीखे मर्यादा की लाज रखने वाले के दास को आप दुःखी न देखिये ॥ ३३ ॥

पालो तेरे टूक को परेहू चूक मूकिये न,
कूर कौड़ी दूको हौं आपनी ओर हेरिये ।
भोरानाथ भोरे हौ सरोष होत थोरे दोष,
पोषि तोषि थापि आपनो न अवडेरिये ॥
अम्बु तू हौं अम्बुचर, अम्ब तू हौं डिम्भ, सो न,
बूझिये बिलम्ब अवलम्ब मेरे तेरिये ।
बालक बिकल जानि पाहि प्रेम पहिचानि,
तुलसी की बाँह पर लामी लूम फेरिये ॥ ३४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant
भावार्थ– मैं आपके टुकड़ों से पला हूँ, अतः चूक पड़ने पर भी मुझे छोड़ न दीजिये; इसमें सन्देह नहीं कि मैं क्रूर हूँ; दो कौड़ी का हूँ, किन्तु आप जरा अपनी ओर तो देखिये अर्थात् आपके लिए मुझे छोड़ देना शोभा की बात न होगी। हे भोलानाथ ! आप साधारण अपराध पर ही बहुत शीघ्र रुष्ट हो जाते हैं; पोषण करके, सन्तोष देकर, बसा कर तथा अपना कर (अब आप) उद्‌बास न कीजिये; अर्थात् अब आप मेरे प्रति अपना भाव रखिये। आप जल हैं और मैं मछली हूँ अर्थात् आपके बिना मैं जीवित नहीं रह सकता। आप माता हैं और मैं अबोध बच्चा हूँ, इसे समझने में आप देर न करें। मुझको केवल आप ही का सहारा है। बालक को व्याकुल समझकर तथा प्रेम की पहचान करके तुलसी की बाँह पर अपनी लम्बी पूँछ फेरिये – रक्षा कीजिये ॥ ३४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

घेरि लियो रोगनि कुजोगनि कुलोगनि ज्यौं,
बासर जलद घनघटा धुकि धाई है ।
बरषत बारि पीर जारिये जवासे जस,
रोष बिनु दोष, धूम-मूल मलिनाई है ॥
करुनानिधान हनुमान महाबलवान,
हेरि हँसि हाँकि फूँकि फौजैं तैं उड़ाई है ।
खाये हुतो तुलसी कुरोग राढ़ राकसनि,
केसरीकिसोर राखे बीर बरिआई है ॥ ३५ ॥

भावार्थ– रोगों, कुयोगों और दुष्टों ने मुझे इस प्रकार घेर लिया है जैसे दिन में बादलों की सघन घटा दौड़कर आकाश को घेर लेती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant
पीड़ारूपी जल बरसाकर सबने क्रोध करके बिना कसूर ही यशरूपी जवासे (हिंगुआ) को अग्नि की तरह जला दिया है ॥ हे करुणानिधान हनुमान जी ! आप अत्यन्त बलवान हैं। आपने हँसकर अपने हाँक के फूँक से देखते-देखते शत्रु-सेना को उड़ा दिया है। हे केशरीकिशोर वीर ! तुलसी को कुरोगरूपी निष्ठुर राक्षस खा गये होते; आपने बरजोरी से (बलपूर्वक) मेरी रक्षा की है ॥ ३५ ॥

मत्तगयंद

रामगुलाम तुही हनुमान गोसाँइ सुसाँइ सदा अनुकूलो ।
पाल्योहौंबाल ज्यों आखर दू पितु मातु सोंमङ्गल मोद समूलो ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

बाँहु की बेदन बाँहपगार पुकारत आरत आनंद भूलो ।
श्री रघुबीर निवारिये पीर रहौं दरबार परो लटि लूलो ।। ३६ ।।

भावार्थ– हे राम जी के सेवक हनुमान गुसाईं ! सदा अनुकूल रहने वाले सुन्दर स्वामी आप ही हैं। मैं वही पाला हुआ बालक हूँ, जिसका पालन आनन्द-मंगल की जड़ दोनों अक्षरों (रा और म) ने माता-पिता के समान किया है ।। हे दृढ़ कोट के समान बाहु वाले ! बाहु की पीड़ा से (दुःखी होकर) दुखिया आपको पुकार रहा है; यह दुखिया आनन्द भी भूल गया है। हे रघुकुल के वीर ! पीड़ा को दूर कीजिये, जिससे लूला होकर थका-माँदा दरबार में पड़ा रहूँ ।। ३६ ।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

घनाक्षरी

कालकी करालता करम कठिनाई कीधौं,
पाप के प्रभाव की सुभाय बाय बावरे ।
बेदन कुभाँति सो सही न जाति राति दिन,
सोई बाँह गही जो गही समीरडावरे ॥
लायो तरु तुलसी तिहारो सो निहारि बारि,
सींचिये मलीन भो तयो है तिहूँ तावरे ।
भूतनि की आपनी पराये की कृपानिधान,
जानियत सबही की रीति राम रावरे ॥ ३७ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

भावार्थ— न जानें काल की भयंकरता है या कर्म की कठोरता है; पाप का प्रभाव है या स्वाभाविक वातरोग की उन्मत्तता है। बुरी तरह से होने वाली पीड़ा रात-दिन सही नहीं जाती; वही बाँह पकड़ी गयी है अर्थात् उसी बाँह में पीड़ा हो रही है, जिसको पवनकुमार ने पकड़ रखा है। तुलसी रूपी वृक्ष आप ही का लगाया हुआ है; उसको दृष्टि रूपी जल से सींचये; वह त्रितापों से तपकर कुम्हला गया है। हे कृपानिधान ! ... आप भूतों की, अपनी और दूसरों की सबकी रीति जानते हैं ॥ ३७ ॥

पाँय पीर पेट पीर बाँह पीर मुँह पीर,
जरजर सकल सरीर पीरमई है ।
देव भूत पितर करम खल काल ग्रह,
मोहि पर दवरि दमानक सी दई है ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant
हौं तो बिन मोल के बिकानो बलि बारेहीतें,

ओट रामनाम की ललाट लिखि लई है।

कुम्भज के किङ्कर बिकल बूड़े गोखुरनि,

हाय रामराय ऐसी हाल कहूँ भई है ॥ ३८ ॥

भावार्थ– पैर की पीड़ा, बाहु की पीड़ा, पेट की पीड़ा, मुख की पीड़ा से सारा शरीर पीड़ामय और जर्जरित है। देवता, भूत, पितर, कर्म, दुष्टकाल और ग्रहों ने दौड़कर मुझ पर तापों की बाढ़-सी दे रखी है। बलिहारी, मैं तो बचपन से ही बिना मोल के बिक गया हूँ और अपने ललाटों में रामनाम का आधार लिख चुका हूँ। हाय, रामजी! भला कहीं ऐसी भी बात हुई है कि (समुद्र को सोख जाने वाले) अगस्त्य मुनि का सेवक गाय के खुर में डूब गया हो? ॥ ३८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

बाहुक सुबाहु नीच लीचर-मरीच मिलि,
मुँह पीर-केतुजा कुरोग जातुधान हैं।
रामनाम जपजाग कियो चहों सानुराग,
काल कैसे दूत भूत कहा मेरे मान हैं॥
सुमिरे सहाय रामलखन आखर दोऊ,
जिनके समूह साके जागत जहान हैं।
तुलसी सँभारि ताड़का सँहारि भारी भट,
बेधे बरगद से बनाइ बानवान हैं॥ ३९॥

भावार्थ– नीच बाहुक सुबाहु, लीचर मारीच और ताड़कारूपिणी मुख की पीड़ा तथा अन्य कुरोग राक्षस के समान हैं। मैं रामनाम का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant
जपरूपी यज्ञ प्रेम के साथ करना चाहता हूँ, किन्तु काल के समान ये भूत और इनके दूत क्या मेरी मानते है? स्मरण करने से दोनों अक्षर (रा और म) राम-लक्ष्मण के समान जिनकी कीर्ति-समूह संसार में प्रसिद्ध है – मेरी सहायता करेंगे। तुलसीदास जी कहते हैं कि उन्होंने ताड़का का संहार करके बड़ी सावधानी से बड़े-बड़े राक्षस वीरों को बरगद के फल-सा बनाकर बाणों से बेंधा है ॥ ३९ ॥

बालपने सूधे मन राम सनमुख भयो,
रामनाम लेत माँगि खात टूकटाक हौं ।
परयौ लोकरीति में पुनीत प्रीति रामराय,
मोहबस बैठो तोरि तरकितराक हौं ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

खोटे खोटे आचरन आचरत अपनायो,
अंजनीकुमार सोध्यो रामपानि पाक हौं ।
तुलसी गोसाईं भयो भोंड़े दिन भूलि गयो,
ताको फल पावत निदान परिपाक हौं ।। ४० ।।

भावार्थ– मेरा मन बाल्यावस्था से सीधे राम जी के सम्मुख हुआ; मैं राम-नाम लेता हूँ और टुकड़े माँगकर खाता हूँ । लोकाचार में पड़कर मोहवश महाराज रामचन्द्र की पवित्र प्रीति को तिनके की तरह तोड़ बैठा हूँ। मेरे बुरे आचरण करते रहने पर भी श्री हनुमान जी ने मुझे अपना लिया और रामचन्द्र जी के हाथों से मेरा सुधार करवाकर पवित्र किया । इससे तुलसी गोस्वामी हुआ और पिछले बुरे दिनों को भूल गया; उसी का फल अब अच्छी तरह पा रहा हूँ ।। ४० ।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

असन-बसन-हीन विषम-विषाद-लीन,
देखि दीन दूबरो करै न हाय हाय को ।
तुलसी अनाथ सो सनाथ रघुनाथ कियो,
दियो फल सीलसिंधु आपने सुभाय को ॥
नीच एहि बीच पति पाइ भरुआइगो,
बिहाइ प्रभु-भजन बचन मन कायको ।
तातें तनु पेषियत घोर बरतोर मिस,
फूटि फूटि निकसत लोन रामराय को ॥ ४१ ॥

भावार्थ— भोजन-वस्त्र से रहित भयंकर दुःख में लीन, दीन और दुर्बल को देखकर कौन नहीं हाय-हाय करता था। तुलसी-सरीखे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अनाथ को दयासागर श्री रामचन्द्र जी ने सनाथ करके अपने स्वभाव से अलभ्य फल दिया। इसी बीच यह नीच प्रतिष्ठा पाकर इतरा गया और मन वचन-कर्म से प्रभु का भजन छोड़ बैठा। इसी से भयंकर बरतोर के बहाने श्री राम जी का नमक (जो कि मैंने उनके नामपर टुकड़े माँगकर खाये हैं) फूट-फूटकर निकल रहे हैं और शरीर पर दिखायी पड़ रहे हैं ॥ ४१ ॥

जिओ जग जान कीजीवन को कहाइ जन,
मरिबे को बारानसी बारि सुरसरि को ।
तुलसी के दुहूँ हाथ मोदक है ऐसे ठाउँ,
जाके जिये मुये सोच करिहैं न लरिको ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant
मोको झूठो साँचो लोग राम को कहत सब,
मेरे मन मान है न हर को न हरि को ।
भारी पीर दुसह सरीरतें बिहाल होत,
सोऊ रघुबीर बिनु सकै दूर करि को ।। ४२ ।।

भावार्थ— श्री राम जी का भक्त कहलाकर जीवित रहूँ और काशी तथा गंगाजी का जल मरने के लिये ही है। ऐसी दशा में (जीवन-मरण) दोनों से ही तुलसी के दोनों हाथों में लड्डू हैं, जिसके जीने और मरने का सोच लड़कर भी न करेंगे। मुझको सब लोग राम जी का दास कहते हैं; मैं नहीं जानता कि वे सच कहते हैं अर्थात् सचमुच ही रामदास समझते हैं; अथवा झूठ अर्थात् व्यंगरूप में कहते हैं। मेरे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant
मन में भी इस बात का गर्व है कि मैं न तो शिवभक्त हूँ औन न विष्णुभक्त ही। शरीर की असह्य और महान पीड़ा के कारण व्याकुल हो रहा हूँ; उसको श्री रघुनाथ जी के बिना दूसरा कौन दूर कर सकता है ! ॥ ४२ ॥

सीतापति साहेब सहाय हनुमान नित,
हित उपदेश को महेस मानो गुरुकै ।
मानस बचन काय सरन तिहारे पाँय,
तुम्हरे भरोसे सुर मैं न जाने सुरकैं ॥
ब्याधि भूतजनित उपाधि काहू खल की,
समाधि कीजे तुलसीको जानि जन फुरकै।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

कपिनाथ रघुनाथ भोलानाथ भूतनाथ,
रोगसिंधु क्यों न डारियत गाय खुरकै ॥ ४३ ॥

भावार्थ– सीतापति स्वामी हैं और मेरे सहायतार्थ हे हनुमानजी ! आप नित्य हितोपदेश के लिए मानो शिवजी के समान गुरु हैं। तन, मन, वचन से मैं आपके चरणों की शरण में हूँ। मैंने आप ही के भरोसे देवताओं को देवता करके नहीं जाना। तुलसी को अपना सच्चा सेवक जानकर व्याधियों, भूत-जनित अथवा किसी दुष्ट के उपद्रवों को दूर कीजिये। हे कपिनाथ, रघुनाथ, भोलानाथ और भूतनाथ ! रोगरूपी समुद्र को गाय के खुर के समान क्यों नहीं कर डालते (जिसमें मैं बिना परिश्रम ही उससे पार हो जाऊँ)? ॥ ४३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

कहों हनुमान सों सुजान रामरायसों,
कृपानिधान संकरसों सावधान सुनिये ।
हरष विषाद राग रोष गुन दोषमई,
बिरची बिरंचि सब देखियत दुनिये ।।
माया जीव काल के करम के सुभाय के,
करैया राम बेद कहैं साँची मन गुनिये ।
तुम्हतें कहा न होय हाहा सो बुझैये मोहि,
हो हूँ रहों मौन ही बयो सो जानि लुनिये ।। ४४ ।।

भावार्थ– मैं हनुमान जी से, चतुर श्री राम जी तथा कृपानिधान शिवजी से कहता हूँ, जरा सावधानी से सुन लीजिये । मैं देखता हूँ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant
कि विधाता ने सारी दुनिया को हर्ष, विषाद, राग, रोष, गुण और दोषमय रचा है। इसकी सत्यता पर मैं अपने मन में विचार भी करता हूँ। वेद कहते हैं कि माया, जीव, काल, कर्म और स्वभाव का सृजन करने वाले श्री रामजी हैं। यह मुझे समझा दीजिये कि आपसे क्या नहीं हो सकता ? जिसमें मैं भी यह जानकर चुप रहूँ कि जो बोया है वही काटता हूँ॥ ४४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

हनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की ।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ।
जाके बल से गिरिवर काँपें ।
रोग दोष भय निकट न झापें ॥१॥
अंजनि पुत्र महा बल दाई ।
सन्तन के प्रभु सदा सहाई ॥२॥
दे बीरा रघुनाथ पठाये ।
लंका जारि सिया सुधि लाये ॥३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant
लंका-सी कोट समुद्र-सी खाई ।
जात पवन सुत बार न लाई ॥४॥
लङ्का जारि असुर सब मारे ।
सियाराम जी के काज सँवारे ॥५॥
लक्ष्मण मूर्छित परे सकारे ।
आनि सजीवन प्राण उबारे ॥६॥
पैठि पताल तोरि यम-कारे ।
अहिरावण की भुजा उखारे ॥७॥
बायीं भुजा असुर दल मारे ।
दाहिनी भुजा सब सन्त जन तारे ॥८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सुर नर मुनि आरती उतारें ।
जय-जय-जय हनुमान उचारें ॥९॥
कञ्चन थार कपूर लै बाति ।
आरती करत अंजना माई ॥१०॥
जो हनुमानजी की आरती गावैं ।
बसि बैकुण्ठ अमर पद पावैं ॥११॥
लङ्का विध्वंस किये रघुराई ।
तुलसीदास स्वामी कीरति गाई ॥१२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

श्रीसूक्त

दरिद्रता और दीनताहीन जीवन से छूटने के लिये ऋषियों ने अनेक प्रकार के अनुष्ठान, जप-तप और दान आदि कर्मों का विधान कहा है।

ऋग्वेद के परिशिष्ट-श्रीसूक्त में धन प्राप्ति के लिये मंत्र हैं। वाराणसी के विद्वान् उमेश मिश्र (सुपुत्र श्री वेणीराम गौड़) ने इन मंत्रों का सरल हिन्दी में अनुवाद किया है। सम्पुटित श्रीसूक्त, ऋणहर्ता गणेशस्तोत्र, बिक्री वृद्धि के लिये मंत्र, कुबेर पूजन एवं श्रीयंत्र व उनकी पूजनविधि आदि भी पुस्तक में सम्मिलित कर दिये हैं जिनके नियमपूर्वक पूजा-पाठ करने से निश्चय ही लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

मूल्य: रु० ३०.०० डाक व्यय अलग

प्रत्येक पुस्तक के साथ पूजा के लिये रंगीन श्रीयंत्र मुफ्त संलग्न है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

मंत्र रामायण

गोस्वामी तुलसीदास रचित श्रीरामचरितमानस के दोहे चौपाईयाँ मंत्रों का कार्य करते हैं।

ऐसे ही कुछ मंत्रों का संग्रह मंत्र रामायण नामक इस पुस्तक में किया है। इन मंत्रों का सम्पुट लगाकर पाठ करने से निश्चय ही भिन्न-भिन्न मनोकामनाएँ पूरी होती हैं। इन्हें बहुतों ने आजमाया है। आप भी अपनी मनोकामना पूर्ण कीजिये।

प्रकाशक – हर प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता–

卐 नाथ पुस्तक भण्डार

११४-दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६, दूरभाष: २३२७५३४४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

श्री बगलामुखी स्तोत्र-कवच

माता श्री बगलामुखी जी को पीताम्बरा देवी के नाम से भी जाना जाता है। इनकी गणना दस महाविद्याओं में होती है।

माँ पीताम्बरा जी की पूजा-पाठ करके साधक ग्रह-शत्रु-रोग पीड़ा, वशीकरण, मोहन, उच्चाटन, मुकदमा आदि के समाधान करते हैं। मंत्र जप के अनुष्ठान विशेष प्रकार से फलदायक व सिद्धिदायक माने जाते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में कवच, स्तोत्र संस्कृत-हिन्दी अनुवाद सहित, बगलातंत्र अष्टोत्तरशतनाम-स्तोत्र, १०८ नाम माला, चालीसा, आरती आदि देकर अधिक उपयोगी बनाया गया है। माता श्री का ध्यान एवं पूजा के लिये पुराणोक्त बहुरंगी चित्र व यंत्र भी दिये गये हैं। पाठ करने से माँ की कृपा सहज ही प्राप्त हो जाती है।

पृष्ठ संख्या ८०　　मूल्य रु० २०.००　　डाक व्यय पृथक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

श्री संतानगोपालस्तोत्रम्

(संस्कृत-हिन्दी)

संतान की महत्ता तो सभी समझते हैं और वंश परम्परा किस प्रकार चलेगी - इसका अभाव सभी को खटकता है।

ऋषियों ने संतान प्राप्ति के लिये अनेक उपाय बताये हैं जिनमें संतानगोपाल-स्तोत्र व यंत्र की पूजा-पाठ, श्रीगोपालसहस्रनाम स्तोत्र, हरिवंशपुराण का श्रवण और भौमव्रत आदि प्रमुख हैं।

पुत्र प्राप्ति के लिये पुत्रप्रदम् अभिलाषाष्टक स्तोत्र का पाठ, काकवन्ध्या (एक संतान वाली) तथा जिनकी संतान असमय में क्षीण हो जाती है ऐसी स्त्रियों के लिये षष्टी देवी की कथा-व्रत आदि श्रेयस्कर हैं।

ये सभी इस पुस्तक में सुविधानुसार पूजा-पाठ करने, समझने के लिये संस्कृत-हिन्दी में सम्मिलित कियें हैं। लाभ उठायें।

पृष्ठ संख्या १६ मूल्य रु० २०.०० डाक व्यय अतिरिक्त

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

"मंत्र रामायण"

गोस्वामी तुलसीदास रचित श्रीरामचरितमानस के दोहे चौपाइयाँ मंत्रों का कार्य करते हैं।

ऐसे ही कुछ मंत्रों का संग्रह मंत्र रामायण नामक इस पुस्तक में किया है। इन मंत्रों का सम्पुट लगाकर पाठ करने से निश्चय ही भिन्न-भिन्न मनोकामनाएँ पूरी होती हैं। इन्हें बहुतों ने आजमाया है। आप भी अपनी मनोकामना पूर्ण कीजिये।

:: प्रकाशक ::

नाथ पुस्तक भण्डार

१९४, दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

हिन्दी पंचांग तिथि निर्णय (बहुरंगी) एवम् पंडित पंचांग (दो रंगों में छपा)

दोनों ही पंचांग अधिक उपयोगी सामग्री के साथ प्रस्तुत हैं।

* विक्रम, शाका व राष्ट्रीय सम्वत् * मुख्यतः तारीख * तिथि का समय कब से कब तक * शुभ-अशुभ योग * नक्षत्र राशि प्रवेश * प्रत्येक दिन की चन्द्र स्थिति * चन्द्रमा-सूर्य-मंगल आदि ग्रहों का उदय-अस्त * अमुक व्रत-त्यौहार की कथा तथा कब और कैसे मनायें * छुट्टियाँ * विवाह आदि मुहूर्त्त * मूल, भद्रा, पंचक * सूर्य-चन्द्र ग्रहण और कुम्भ * ग्रह पीड़ा निवारण मंत्र-यंत्र-उपाय * राशि ज्ञान-फल, शुभ वार-रंग-अंक सहित * राशि रत्न धारण विधि * दिन-रात का चौघड़िया * राहु (नेष्ट) काल- किस समय शुभ कार्य नहीं करना चाहिए * अभिजित काल-अमुक दिन शुभ मुहूर्त न होने पर भी शुभ कार्य कब करें * दिशाशूल परिहार- यात्रा के दिन दिशाशूल होने पर भी यात्रा दिशाशूल दोष दूर कर कैसे करें * दूध-अखबार हिसाब का कोष्टक * मौसम * तेजी-मंदी (मार्किट रुख) * विश्व घटना चक्र * देवी-देवताओं के चित्र व उनके जपनीय मंत्र * देव पूजा में ओउम् (ॐ), स्वास्तिक (卐), दीपक, मंगल कलश, नारियल, घंटा-घड़ियाल व परिक्रमा का महत्व * आरती क्यों और कैसे करें * भगवान राधा कृष्ण की लीला स्थली मथुरा-वृन्दावन के मंदिर में मनाये जाने वाले पर्व-उत्सवों का विशेष वर्णन आदि।

साइज २८ X ४४ से. मी.

पृष्ठसंख्या २६

मूल्य : रु. २०.००
: रु. १५.००

प्रकाशक :
卐 नाथ पुस्तक भण्डार
१९४, दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६ दूरभाष : २३२७५३४४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh